वर्ष-3, अंक-6, जून 2019
जे-7, श्रीरामनगर, रायपुर (छ.ग.)

आर.एन.आई. पंजीकरण क्रमांक
CHHHIN/2017/72506

किलोल

संपादक - डा. आलोक शुक्ला
सह-संपादक - एम. सुधीश

संपादक मंडल -
राजेंद्र कुमार विश्वकर्मा, शेख अजहरुद्दीन

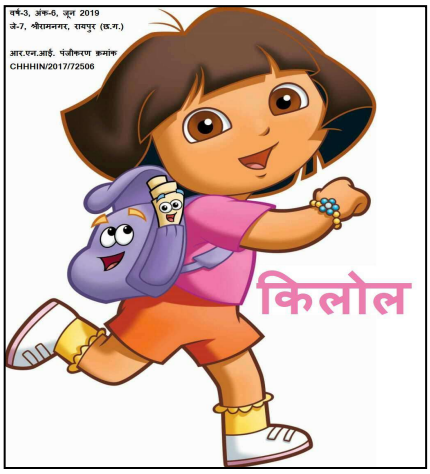

प्यारे बच्चों,

गरमी की छुट्टियों में आप सबने बहुत मज़ा किया होगा. परीक्षाओं के बाद छुट्टियों की बात ही कुछ और है. कुछ बच्चे अपने नाना-नानी, दादा-दादी से मिलने गए होंगे. कुछ पर्यटन के लिए घूमने भी गए होंगे. बहुत से स्कूलों में गरमी की छुट्टियों में समर कैंप लगाए गए थे जिनमें मनोरंजन के साथ आपको बहुत कुछ नया सीखने को भी मिला होगा. अपने अनुभव हमें ज़रूर लिखना.

अब फिर से स्कूल खुलने का समय आ गया है. बहुत से नए-पुराने मित्र मिलेंगे. नई पुस्तके मिलेंगी और शायद नए शिक्षक भी. स्कूल में आप नई-नई बातें तो सीखेंगे ही, साथ में खेल-कूद का आनंद भी लेंगे.

किलोल के लिये कहानी, गीत, कविताएं, पहेलियां, चुटकुले आदि का हमेशा की तरह स्वागत है. हमेशा की तरह किलोल http://alokshukla.com/Books/BookForm.aspx?Mag=Kilol पर नि:शुल्क डाउनलोड के लिये उपलब्ध है. सभी बच्चों को ढ़ेर सा प्यार.

आलोक शुक्ला

धैर्य और शांति

लेखक - संतोष कुमार साहू (प्रकृति)

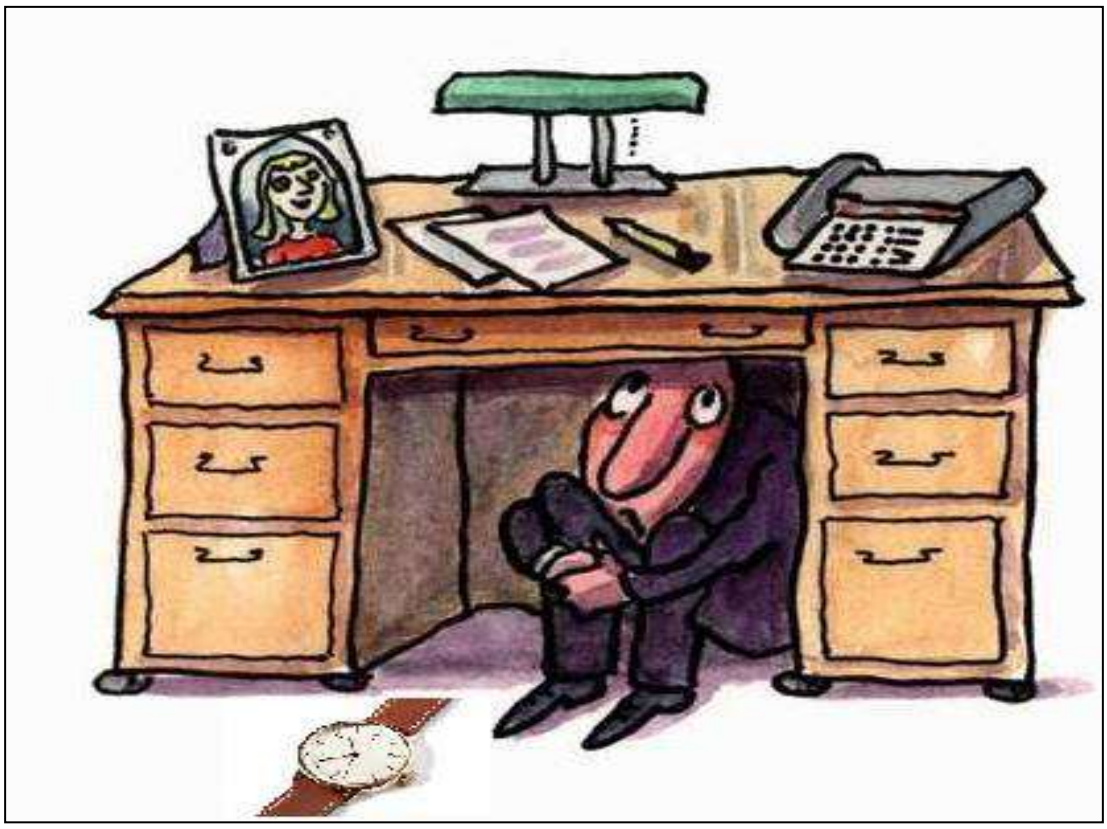

एक आदमी कुछ सामग्री खरीदने एक दुकान में गया. अपनी आवश्यकता का समान खरीद कर वहाँ से बाहर निकलने लगा तभी उसकी नजर अपने बायें हाथ पर गई. उसने देखा कि उसकी बहुत कीमती घडी दुकान से समान लेते समय कहीं गिर गयी थी. उसने घड़ी को बहुत खोजा पर वह उसे नहीं मिली. उसने वहां खेल रहे कुछ बच्चों को बुलाया और कहा कि जो मेरी घडी इस दुकान से खोज कर लायेगा उसे मैं ईनाम दूंगा. सभी बच्चे खुशी से सरपट दौडकर दुकान में घडी खोजने लगे पर घड़ी उन्हें नहीं मिली. वे सब वापस चले गए. तब सबसे छोटा बच्चा वापस आकर उस आदमी से बोला - 'मैं खोज कर देखता हूँ.' वह आदमी बहुत निराश मन से बोला - 'तुम क्या खोजोगे? फिर भी प्रयास कर लो.' वह छोटा

सा बच्चा दुकान के अंदर गया और कुछ समय बाद खुश होकर दुकान से बाहर आया. उसने घडी उस आदमी के हाथो में दी. उस आदमी ने पूछा - 'तुमने इतनी जल्दी कैसे खोज लिया?' बच्चे ने कहा - बाकी बच्चे शोर गुल करते हुए खोज रहे थे. मैं चुपके से गया और धैर्य व शांत होकर चुपचाप आंख बंद करके एक स्थान पर बैठ गया. मैने शांतिपूर्ण तरीके से घडी की टिक-टिक की आवाज को सुना और जहाँ आवाज सुनाई दी वहाँ पर ही घडी मिल गई. उस आदमी ने बच्चे को इनाम दिया. वह बच्चा खुशी खुशी चला गया.

कहते हैं धैर्य और शांति से किया गया कार्य हमेशा अच्छा प्रतिफल देता है. इसलिए हमें हमेशा शांति और धैर्य के साथ हर कार्य करना चाहिये.

एक सोच

लेखक - नेमीचंद साहू

एक जंगल में बहुत सारे जानवर रहते थे. एक दूसरे से हिल मिलकर जीवन बिता रहे थे. एक बार जंगल में भयानक आग लग जाने के कारण सभी जानवर जान बचाकर भागने लगे, किंतु एक छोटी सी चिड़िया पास के एक सरोवर से अपनी चोंच से पानी लाकर आग बुझाने का प्रयत्न करने लगी.

इस नादानी को देखकर एक राहगीर हंसते हुए बोला - 'अरी चिड़िया इस तरह क्या तू आग को बुझा पायेगी?

चिड़िया बडी़ भोलेपन से बोली - 'जब इस जंगल का इतिहास लिखा जायेगा तो मेरा नाम आग बुझाने वालों में होगा न कि आग लगाने वालों में.' यह सुनकर राहगीर मुस्कराते हुए चला गया.

एक सुंदर सोच किसी को भी महान बना देती है.

परोपकार का फल

लेखिका - पद्यमनी साहू

बी.एस.सी. की पढ़ाई पूरी करने के बाद पदमा का विवाह रायपुर शहर के पास एक गांव में एक बड़े किसान के यहाँ हुआ. विवाह जे बाद पदमा घर की छोटी बहू के रूप में अपने कर्त्तव्य का पालन करने लगी.

ससुराल में आर्थिक सम्पन्ता के बावजूद मायके व ससुराल के पारिवारिक वातावरण में बहुत अंतर था. सहयोग सहकार व प्यार भरे वातावरण से आई पदमा ससुराल के तनावपूर्ण वातावरण से दुःखी रहती व रोती रहती. इसी तरह एक वर्ष बीत गया. तब पदमा को पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई.

पदमा बेटे के लालन पालन में व्यस्त हो गई व अपने सारे दुःख भूल गई. तभी पदमा को वर्षो पहले की एक दादी माँ की बात याद आ गई. पदमा जब कक्षा 12

में पढ़ाई कर रही थी तब की बात है. वह घर से कुछ दूर नगरपालिक के नल से पानी भरने जाती थी. नल के सामने वाले मकान में एक बूढ़ी दादी माँ रहती थीं. बुढ़ापे के कारण चल पाने में असमर्थ दादी माँ घिसटते हुये नल के पास आतीं व नहा कर घिसटते हुए ही घर जातीं. घर में बहू, दो पोतियां, पुत्र व दो पोते रहते थे. दादी माँ को किसी का सहयोग नहाने धोने में नही होता था.

एक दिन जब पदमा पानी भर थी तभी बढ़ी दादी माँ नल से नहाने आईं. दादी माँ को देख कर पदमा ने अपने बर्तन में भरे पानी से दादी माँ को नहलाया व उन्हें उनके घर तक पहुँचाया. पदमा के इस व्यवहार से दादी माँ भाव विभोर हो गईं. पदमा को आशीर्वाद दिया कि ससुराल जाते ही तुम्हे पुत्र रत्न की प्राप्ति हो, जो तुम्हारे कुल का नाम रोशन करे. ऐसा कार्य जो निःस्वार्थ भाव से किया जाता है वह परोपकार कहलाता है. हमे अपने बुजुर्गों का सम्मान करना चाहिए एवं जिन कार्यो को करने में वे असमर्थ हो हमे उन कार्यो में उनका सहयोग करना चाहिए.

संगति

लेखक - नेमीचंद साहू

एक व्यक्ति बाज़ार में तोता बेच रहा था. उसके पास एक जैसे दो तोते थे. देखने में दोनो एक जैसे नजर आते थे, किंतु उसने एक तोते की कीमत 50 रुपये व दूसरे तोते की कीमत 500 रुपये रखी थी. लोग हैरान थे कि एक जैसे तोते की कीमत अलग--अलग क्यों है?

एक आदमी ने दोनो तोते खरीदकर लिए. घर पहुंचकर उस आदमी ने सुना कि कम कीमत वाला तोता कह रहा था - 'मारो, पकड़ो, काटो, जाने मत दो.' साथ ही वह गंदी-गंदी गालियां भी दे रहा था. दूसरा तोता 'राम-राम सीताराम' कह रहा था.

उस आदमी ने तोते वाले के पास वापस जाकर कारण पूछा तो पता चला कि बचपन में कम कीमत वाला तोता चोरों के साथ रहता था और दूसरा साधु-संतों के साथ रहा करता था. इस तरह संगति के असर से एक तोता अच्छा और दूसरा बुरा बन गया.

इसलिए हमें अच्छे लोगों की संगति करनी चाहिए.

कहानी पूरी करो

पिछले अंक में हमने आपको यह अधूरी कहानी पूरी करने के लिए दी थी -

अधूरी कहानी - फिर नहीं ललकारा

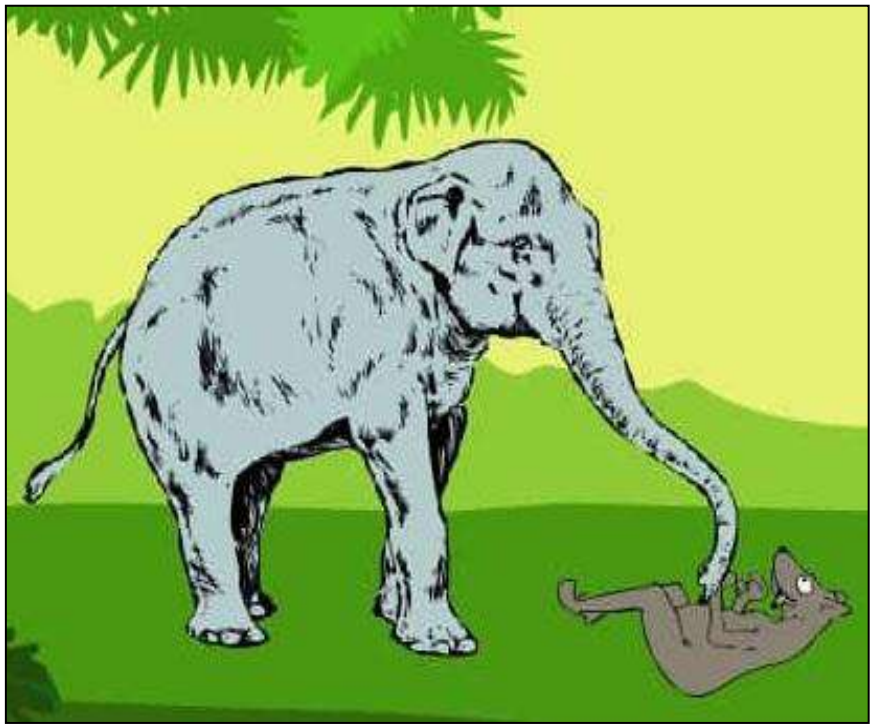

बैडी सियार को इन दिनों पहलवानी का शौक चढ़ा था. उसने अच्छी-खासी रकम देकर जंबों हाथी से पहलवान के गुण भी सीख लिए थे. जंबों हाथी ने एक दिन बैडी सियार से कहा- "अब तुम अच्छे पहलवान बन गए हो. मैंने तुम्हें खास और बड़े सभी दांवपेंच सीखा दिए हैं. मुझे नहीं लगता कि कोई तुम्हे आसानी से पटकनी दे सकता है." बैडी खुश होते हुए बोला- "तो उस्ताद इसका मतलब ये हुआ कि मैं चंपकवन का नामी पहलवान बन गया हूं न?" जंबों हाथी बोला -

इंद्रभान सिंह कंवर व्दारा पूरी की गई कहानी

जम्बो हाथी बोला - 'अभी तो तुम यहाँ के सबसे ताकतवर जानवर हो, मगर एक शक्ति और है जो हम सबसे ताकतवर है. जिसका कोई सामना नहीं कर सकता.' बैडी बोला - 'उस्ताद कौन है वो. उसे मेरे सामने लाइये. मैं उसका सामना करूंगा.' तब हाथी को उसके घमंड का अहसास हो गया. उसने कहा समय आने पर तुम्हारा सामना उससे अवश्य होगा, अभी तुम्हारी शिक्षा पूरी नहीं हुई है.

अब बैडी सियार अपने घमंड में चूर होकर अपने उस प्रतिव्दन्दी कि तलाश में लग गया. उसने चम्पकवन के सभी जानवरों पर रौब दिखाते हुए उन्हें परेशान करना शुरु कर दिया. अपने आपको सबसे ताकतवर साबित कर वहा का राजा बन गया. घमंड उसके सिर चढ़कर बोल रहा था. सभी जीव उससे परेशान हो गये थे. उसका सामना करने की ताकत किसी में न थी इसलिए सभी चुप थे.

समय बीतता गया. फ़िर गर्मी का दिन आ गया. एक दिन चंपकवन में जोरों का तूफ़ान आया और तेज़ बारिश शुरू हो गई. पूरा जंगल तहस-नहस हो रहा था. सभी को अपनी जान की चिंता हो रही थी. चारो ओर हाहाकार मचा हुआ था. सभी जीव जंगल के एक ऊँचे टीले पर एकत्रित हो गये और तूफ़ान के रुकने का इंतजार करने लगे.

वहां बैडी सियार भी था जो अपनी जान बचाने छुपा था. तब हाथी ने उसके पास जाकर समझाया की आज हम सभी जीवन और मृत्यु के कगार पर एक साथ खड़े हैं. यही वो प्रकृति की शक्ति है जिसके आगे तुम्हारी ताकत भी छोटी है. इससे कोई

नही जीत सकता. इसलिए कभी अपने आपको सर्वशक्तिमान मत समझो और घमंड मत करो. इस संसार में प्रकृति से ज्यादा खतरनाक और ताकतवर कोई नहीं है. सबसे मिलजुलकर प्रेम से रहो. सभी को सम्मान दो और सम्मान पाओ. अपनी ताकत का इस्तेमाल दूसरों की सुरक्षा के लिये करो. यही जिन्दगी का पाठ है, जिसे तुम अपने घमंड के कारण नही सीख पाये. बैडी सियार को सभी कुछ समझ आ गया और उसने सभी से माँफ़ी मांगी. धीरे-धीरे तूफ़ान थम गया और जंगल में शान्ति और खुशहाली छा गई. इसके बाद बैडी सियार ने फ़िर कभी किसी को नहीं ललकारा, और अपनी ताकत का सही इस्तेमाल करने लगा.

<u>सीख</u> - कभी अपने ताकत पर घमंड मत करो क्योंकि प्रकृति से अधिक ताकतवर कुछ नही है. सभी को सम्मान दो और सम्मान पाओ.

<u>कन्हैया साहू (कान्हा) व्दारा पूरी की गई कहानी</u>

जम्बो हाथी बोला हां अब तुम एक बहुत अच्छे पहलवान बन गए हो. बैडी सियार अपनी तारीफ़ सुनकर बहुत उत्साहित हो गया. उसे लगने लगा कि अब इस जंगल का कोई भी जानवर मुझसे मुकाबला नही कर सकता और कोई मुकाबला करता भी है तो उसे अपनी पहलवानी दांव पेंच से आसानी से पटकनी दे सकता हैं. बैडी सियार को अपने ताकत पर अब बहुत घमण्ड होने लगा. वह जंगल के छोटे छोटे जानवरों को अपनी पहलवानी के बल पर परेशान करने लगा. जंगल के छोटे जानवर अब बैडी सियार के व्यवहार से बहुत दुखी रहने लगे और सियार के डर से छुपे-छुपे से रहने लगे. जंगल के जानवरों को परेशान करने और उन पर रौब

झाड़ने में बैडी सियार को मज़ा आता था. हर दिन वह किसी न किसी जानवर को परेशान करता. वह अपने आप को सबसे ताकतवर समझने लगा.

एक दिन बैडी सियार को उसका गुरु हाथी जंगल मे मिला. सियार ने बड़ी अकड़ दिखाते हुए कहा - 'आपने मुझे जो पहलवानी सिखायी है उसे आज मैं आप पर ही आजमाता हूं. आपको मुझसे मुकाबला करना होगा.' हाथी ने उसे बहुत समझाया कि मेरा और तुम्हारा कोई मुकाबला हो ही नही सकता. सियार को लगा कि हाथी उससे डर कर मुकाबला नही करना चाहता. बैडी सियार ने ललकारते हुए कहा - 'तुम मुझसे डर गए.' इतना सुनते ही हाथी को बैडी सियार पर बहुत गुस्सा आया. उसने अपनी सूंड से बैडी सियार को पकड़कर जोर से उठाकर जमीन पर पटक दिया और अपने पैर से दो तीन बार जोर-जोर से मारा. अब बैडी सियार का दिमाग ठिकाने आ गया. उसे लगा कि वह किसी भी तरह हाथी से मुकाबला करने लायक नही है. उसने सोचा कि अगर मैं यहाँ रुका तो ये हाथी मुझे मार डालेगा. वह जमीन से उठकर दुम दबाकर भाग गया. उस दिन के बाद बैडी सियार ने जंगल के किसी भी जानवर को मुकाबले के लिए नहीं ललकारा. उसका पहलवानी का भूत अब पूरी तरह सिर से उतर गया था.

सीख :- कभी भी अपने बल बुध्दि पर घमण्ड नही करना चाहिए.

अगले अंक के लिये इस मज़ेदार कहानी को पूरा करके हमें dr.alokshukla@gmail.com पर भेज दीजिये. अच्छी कहानियां हम अगले अंक में प्रकाशित करेंगे.

अधूरी कहानी - जादूई कछुआ

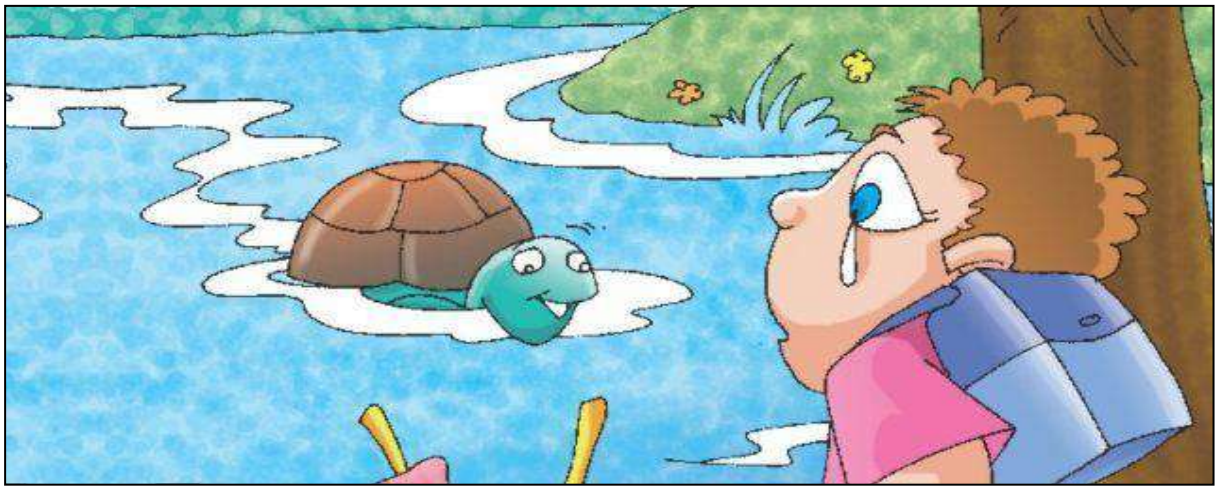

सर्दियों की दोपहर में एक छोटा लड़का तालाब के पास नीम के पेड़ के नीचे बैठा था. वह लड़का बहुत उदास था. नदी के पानी को देखते-देखते उसकी आँखों में मोटे-मोटे आंसू आने लगे. अचानक उसने देखा कि एक कछुआ तैरता हुआ उसके पास आ रहा था. वह कछुआ धीरे-धीरे तैर रहा था.

जब वह कछुआ तालाब के किनारे पहुचा, तब तक छोटे लडके ने रोना बंद कर दिया था. लडके ने कछुए से कहा - "तुम कैसे हो? आज मेरी अध्यापिका ने मुझे मेरी रिपोर्ट कार्ड दिया. मैंने अच्छी पढाई नही की इसलिये मेरा रिज़ल्ट भी बहुत गंदा आया है. मेरी माँ मेरे रिज़ल्ट को देखकर बहुत दुखी होगी. शायद वह मुझसे गुस्सा भी हो जायेगी. अब मै क्या करूं"

कछुआ लडके की बात ऐसे सुनने लगा जैसे उसे सब कुछ समझ आ रहा हो. लड़के ने आगे कहा "अगर मै अपने नम्बर ना बताऊं तो मेरी माँ उदास नही होगी. हां मै यही करूंगा." लड़का अपनी समस्या का हल सोचकर संतुष्ट हुआ. उसके चेहरे पर थोड़ी हंसी आ गयी. वह खड़ा हुआ और घर जाने के लिए तैयार हो गया. तभी उसे कछुए की आवाज सुनाई दी -

चित्र देखकर कहानी लिखो

पिछले अंक में हमने आपको कहानी लिखने के लिये यह चित्र दिया था -

इस चित्र पर हमें कई मज़ेदार कहानियां मिली हैं. उनमें से एक को हम यहां प्रकाशित कर रहे हैं -

जंगल का राजा कौन?

लेखक - इन्द्रभान सिंह कंवर

बात उन दिनों की है जब जंगल का राजा शेर बूढ़ा हो चुका था. अब बारी थी नया राजा चुनने की जो जंगल के राज-काज को सम्भाल सके. मंत्रिमंडल की सहमति से शेर का पुत्र जो बुध्दिमान, साहसी, निडर और चालाक था, को राजा बनाने की योजना चल रही थी.

तभी जंगल के ही चालाक लोमड़ ने भी जंगल का राजा बनने के लिये अपनी इच्छा प्रकट की. लोमड़ भी बहुत सुन्दर और चालाक था. अब सभी के सामने नया राजा चुनने की परेशानी खड़ी हो गई. मंत्रिमंडल ने दो प्रत्याशी होने के कारण श्रेष्ठ प्रत्याशी का चुनाव कर राजा चुनने का कार्य सबसे पुराने और अनुभवी मंत्री भालू को सौपा.

मंत्री भालू के सामने बड़ी ही विषम परिस्थिति उत्पन्न हो गई, क्योंकि दोनों ही प्रत्याशी बड़े ही चालाक, निडर, साहसी और वीर थे. किन्तु श्रेष्ठ को ही चुनकर राजा का दायित्व सौपना था. उसने एक उपाय सोचा. दोनों को जंगल का भ्रमण कर वहाँ का हाल-चाल पता करने के लिये एक साथ भेजा. दोनों जंगल भ्रमण के लिये साथ में निकले.

रास्ते में एक घटना घटित हुई. हिरन का एक बच्चा खेलते-खेलते दलदल में गिरकर फंस गया था, जिसे दोनों ने देखा परन्तु लोमड़ उसे देखकर भी कीचड़ में गंदा होने के डर से आगे निकल गया. वहीं शेर का पुत्र रुककर उस हिरन के बच्चे को बचाने के प्रयास में लग गया. काफ़ी मशक्कत के बाद शेर के पुत्र ने हिरन के बच्चे को सही सलामत बचा लिया. भालू यह सब देख रहा था.

दोनों प्रत्याशी जंगल भ्रमण कर मंत्रिमंडल की सभा में पहुँच गए. सभी की नजरें भालू के निर्णय पर टिकी हुई थीं. कुछ देर पश्चात भालू ने शेर के पुत्र का नाम पुकार कर उसे जंगल का राजा नियुक्त किया. सभी ने ताली बजाकर उसके निर्णय का स्वागत किया, परंतु सब उसके इस निर्णय के कारण के बारे में भी जानना चाह रहे थे. भालू ने सभी को पूरी घटना सुनाते हुए कहा - "असली राजा वही होता जिसे अपनी पूरी प्रजा कि चिंता होती है. चाहे वह जीव छोटा हो या बड़ा. सच्चा राजा कभी अपनी प्रजा को मुसीबत में नही छोड़ सकता.'' पुनः एक बार सभी ने

ताली बजा कर भालू के निर्णय का सम्मान करते हुए शेर के पुत्र का राजतिलक किया और जश्न मनाया.

अब नीचे दिये चित्र को देखकर कहानी लिखें और हमें dr.alokshukla@gmail.com पर भेज दें. अच्छी कहानियां हम किलोल के अगले में प्रकाशित करेंगे.

नवाचार - मस्ती की पाठशाला से बेहतर बनाएं सरकारी शाला

लेखिका - ममता बैरागी

जिंदगी में हर बार वक्त बदलता है और वक्त के साथ साथ सब कुछ बदलता है. वह जमाना था जब वेद मंत्रों को पढ़ाया जाता था. फिर युग बदला तब वेदों के साथ साथ हथियार चलाना भी सिखलाया जाने लगा. बाद में शिक्षा केवल किताबों सीमित रह गई. जिसे पढ़ना लिखना आ गया उसे शिक्षित कहा गया. आज समय आ गया है जब तकनीक का उपयोग कर मोबाइल से, कम्प्युटर से, पिक्चर्स से या विडियोज़ से शिक्षा देने की आवश्यकता महसूस होती है.

आज आप को बतलाते हुए ऐसा लग रहा है कि वाकई में जो शाला नहीं जाते वह अनपढ़, अज्ञानी है या वह जिसे फेसबुक, विडियोज़, लेपटाप चलाने नहीं आते वह अनपढ़ सा अनुभव करते हैं. सबके हाथ में मोबाइल है. अरे स्कूलों में पढ़ने वाले बालक ही क्या, अनपढ़ लोग भी बखूबी यह सब चला रहे हैं. हमें बुलाया गया, कम्प्युटर सीखने. पहले दिन ऐसा लगा कि पहली कक्षा में बैठे हों. कुछ समझ में नहीं आ रहा था. धीरे-धीरे कुछ-कुछ समझे. तब तक समय पूरा हो गया. बस कुछ सीखा परन्तु रूचि बढ़ गई. विचार आया कि अब वह दिन दूर नहीं जब सारे काम

इनसे ही होंगे. यहां पर नवाचार करने को मन हुआ है. बच्चे तो बच्चे ठहरे. उन्हें मोबाइल के जरिए भी शाला बुला सकते हैं. या शाला में ऐसा हॉल बना लें जहां पिक्चर के माध्यम से भी बहुत कुछ सिखाया जा सकता है. तब में पाती हूँ कि जो सोच रही हूं वह तो नवोदय क्रांति परिवार के बहुत से शिक्षक साथियों, विशेषकर शिक्षक गोपाल कौशल जी ने भी किया है. तब से लग रहा है कि हम भी कुछ कर दिखाएं. कुछ गा कर बताएं और कुछ तत्काल लिखने को कहें. तब शाला में रौनक भी रहेगी ओर बच्चो की संख्या भी बढेगी. कुछ तो ऐसा करना होगा कि बच्चों को उनके माता पिता रूचि लेकर स्कूल भेजें. बच्चो को क्योंकि बहुत सी सुविधाएं दी गई हैं - ड्रेस, छात्रवृत्ति, किताबें, भोजन आदि. इसके बाद भी माता-पिता इसे नकार देते हैं. उन्हें ही रुचि ही नहीं तो बच्चे स्कूल कैसे आएं. अब बहुत गंभीरता से सभी शिक्षकों को इकट्ठा होकर इस समस्या से निपटने के लिए सोचना होगा जिससे सभी बच्चे शाला आएं. अगर सभी आ गये तब तो मजा ही मजा है. फिर उन्हें केवल उनकी नींव से जोडना है. एक अनपढ़ भी सब्जी बेचता है तो रुपये पूरे गिनकर लेता-देता है ओर हिसाब का भी बहुत पक्का होता है. तो ऐसी क्या कमजोरी है कि अनपढ़ व्यक्तियो को हिसाब किताब करना आ रहा है ओर पढ़े-लिखे बच्चो को नहीं. कहीं कमी है. इस कमी को फिर से सुलझाना होगा. कुछ ऐसा करना होगा कि बच्चे बोल उठें.

आमा खाव मजा पाव

लेखिका - प्रिया देवांगन "प्रियू"

गरमी के मौसम आते साठ सब झन ला आमा के सुरता आथे. लइका मन ह सरी मंझनिया आमा टोरे ला जाथे, अऊ घर में आ के नून - मिरचा संग खाथे. लइका मन ला आमा चोरा के खाय बर बहुत मजा आथे. मंझनिया होथे तहान आमा बगीचा मा आमा चोराय ला जाथे. आमा एक प्रकार के रसीला फल होथे. ऐला भारत में फल के राजा बोले जाथे. आमा ला अंग्रेजी में मैंगो कहिथे एकर वैज्ञानिक नाम - मेंगीफेरा हे.

आमा के किसम - आमा भी कई किसम के होथे अउ सबके सुवाद अलग अलग होथे. जइसे - तोतापरी आमा, सुंदरी आमा, लंगडा आमा, राजापुरी आमा, पैरी अउ बंबइया आमा.

फल के राजा - आमा ला फल के राजा कहे जाथे. आमा ला फल के राजा काबर

कहिथे जबकि सबो फल हा स्वास्थ्य वर्धक होथे. दरअसल, भारतीय आमा अपन स्वाद के लिए पूरा दूनिया में मशहूर हे. भारत में मुख्य रूप से 12 किसम के आमा होथे.

आमा के उपयोग - आमा के उपयोग सिरिफ फल के तौर में नही बल्कि सब्जी, चटनी, पना, जूस, कैंडी, अचार, खटाई, शेक, अमावट (आमा पापड़) अऊ बहुत से खाये-पीये के चीज के सुवाद बढाये बर करे जाथे.

आमा के फायदा - आमा के बहुत से फायदा भी हे. जइसे –

1. **कैंसर से बचाव** - आमा में मौजूद एंटीऑक्सीडेंट कोलोन कैंसर, ल्यूकोमिया अऊ प्रोटेस्टेट कैंसर के बचाव में फायदामंद हे.ऐमा बहुत से तत्व होथे जो कैंसर से बचाव में मददगार होथे.
2. आंख के रौशनी बाढथे - आमा में विटामिन ए भरपूर होथे, जो आंखी के लिए बरदान हे. एकर से ऑखी के रोशनी बने रहिथे.
3. **त्वचा बर फायदामंद हे** - आमा के गुदा ला चेहरा मा लगाय से चेहरा में निखार आथे.
4. **पाचन क्रिया ला ठीक रखथे** - आमा में कई प्रकार के एंजाइम होथे जेहा प्रोटीन ला तोड़े के काम करथे. एकर से खाना जल्दी पच जाथे.
5. **गरमी से बचाव** - गरमी के दिन मा कही घर से बाहर निकलना रहीथे ता एक गिलास आमा के पना पी के निकलना चाहिए. एकर से लू नइ लगे.

ये परकार से आमा हा बहुत उपयोगी चीज हरे. एला सबझन ला खाना चाहिए अउ मजा लेना चाहिए.

पानी बिना जग अंधियार

लेखक - महेन्द्र देवांगन "माटी"

पानी ह जिनगी के अधार हरे. बिना पानी के कोनो जीव जन्तु अऊ पेड़ पौधा नइ रहि सके. पानी हे त सब हे, अऊ पानी नइहे त कुछु नइहे. ये संसार ह बिन पानी के नइ चल सकय. पानी बिना जग अंधियार हे. ऐकरे पाय रहिम कवि जी कहे हे -

रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून।

पानी गये न उबरे, मोती मानुष चून।।

आज के जमाना में सबले जादा महत्व होगे हे पानी के बचत करना. पहिली के जमाना में पानी के जादा किल्लत नइ रिहिसे. नदियाँ, तरिया अऊ कुंवा मन में लबालब पानी भराय राहे. जम्मो मनखे मन तरीया, नदियां में जाये अऊ कूद-कूद

के, दफोड़-दफोड़ के डूबक-डूबक के नहा के आये. लड़का मन ह घंटा भर ले तउरत राहे अऊ पानी भीतरी छू छुवऊला तक खेले. एकर से शरीर ल फायदा तक राहे. एक तो शरीर के ब्यायाम हो जाये अऊ दूसर जेला पानी में तंउरे बर आ जाथे ओहा पानी में कभू नइ बूड़े. आज तरिया नदिया में नहाय बर छूट गेहे तेकरे सेती आदमी मन तँउरे ल नइ सीखे हे. अऊ ओकरे सेती कतको आदमी मन पानी में बूड़ के मर जथे. नल के नवहइया मन कहां ले तंउरे ल सीखही ग? अऊ कभू कभार संऊख से टोटा भर पानी में चल देथे त उबुक चुबुक हो जाथे.

आज पानी ह दिनो दिन अटात जावत हे जे नदियां, तरिया, कुंवा, बावली मन लबालब भराय राहे आज सुखावत जात हे. गांव मन मे हेण्डपम्प लगे हे ओला टेड़त-टेड़त थक जबे त एक मग्गा पानी निकलथे. नल में बिहनिया ले संझा तक लाइन लगे रहीथे. पानी के नाम से रोज लडई झगरा होवत हे.

ये सब ह हमरे गलती के कारण हरे. गांव गाँव अऊ खेत खार सब जगा आदमी मन बोर खोद डरे हे. धरती दाई के छाती ल जगा जगा छेदा कर डरे हे. पेड़ पौधा ल रात दिन काटत जात हे. बड़े बड़े कारखाना लगा के परयावरन ल परदुसित करत जात हे. एकरे सब परिनाम आय,पानी ह दिनो दिन कम होवत जात हे.

हमर देश ल नदिया के देश कहे जाथे।इंहा गंगा, जमुना, कृष्णा, कावेरी, शिवनाथ, महानदी जइसे कतको बड़े बड़े नदियां हे. फेर बड़े दुख के बात हरे के अइसन बड़े बड़े नदियां के राहत ले बोतल में पानी ल खरीद के पीये बर परत हे. कोनो ह सोचे नइ रिहिसे के हमरो देश में पानी ल खरीद के पीये बर परही. फेर आज का से का नइ होगे.

आज हमला पानी के बचत करना बहुत जरूरी होगे हे. नही ते आने वाला समय ह अऊ भयंकर हो जाही. गांव शहर में देखे बर मिलथे के कतको नल में टोटी नइ राहे. अऊ पानी ह भक्कम बोहात रहिथे. त जनता मन ला भी चाहिए कि टोटी लगा के पानी के बरबादी ल रोके.

जतके पानी के बचत करबो ओतके हमला फायदा हेअऊ आने वाला पीढ़ी ह सुख से रही. ओकरे पाय कहे हे -

जल ही जीवन हे.

पानी जिनगी के अधार ए.

पानी बिना जग अंधियार हे.

<u>नवाचार बेहतर और आनंददायी शिक्षा के प्रयास</u>

लेखक एवं चित्र - प्रेमचंद साव

मैं आप सभी साथियों को शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला अरेकेल, विकास खंड बसना, जिला-महासमुंद (छत्तीसगढ़) में किये जा रहे बेहतर और आनंददायी शिक्षा के लिये किए जा रहे प्रयासों से परिचित कराना चाहता हूं.

<u>मासिक वाल मैगजीन बाल दर्पण का नियमित प्रकाशन</u> - मासिक वॉल मैगजीन - 'बाल दर्पण' का नियमित प्रकाशन किया जाता है. इससे छात्र-छात्राओं में स्वयं सीखने की प्रवृत्ति, लेखन क्षमता, बौद्धिक क्षमता एवं मौलिक सोच को बढ़ावा तथा अपने आसपास के घटनाक्रम को जानने, राज्य, देश, विदेश में घटित घटनाओं को लिखने और समझने में सहायता मिल रही है. वॉल मैगजीन के माध्यम से छात्र-छात्राओं व्दारा सामान्य ज्ञान के साथ-साथ कहानी, कविता, चित्र, अनमोल वचन, पहेली, विज्ञान पहेली, चुटकुले, निबंध, प्रेरक प्रसंग, पर्यावरण संरक्षण, ग्लोबल वार्मिंग, विज्ञान एवं स्वच्छता से संबंधित, चित्र एवं अन्य मनोरंजक जानकारियों को नए

तरीके से पेश किया जा रहा है. इसमे छात्र-छात्राओं के स्वरचित लेख भी समाहित होते हैं. बच्चों में भाषायी कौशल,लेखन क्षमता, बौध्दिक क्षमता और तर्क क्षमता प्रखर हो रहे हैं.

<u>चिल्ड्रन बैंक की शुरुआत</u> - बच्चों को बचत करने की लिए सीख देने हेतु चिल्ड्रन बैंक की शुरुआत की गई है. छात्र-छात्राओं को पॉकेट मनी के रूप में कुछ रुपए मिलते हैं. उन्हीं रुपयों में से कुछ रुपए का बचत करके वे चिल्ड्रन बैंक खाता में जमा कर रहे हैं. इससे छात्र-छात्राओं में बैंकों में पैसा जमा करने,बचत करने एवं बैंकिंग प्रणाली को समझने में मदद मिल रही है. छात्रगण आत्मनिर्भर बनने के साथ बैंक की कार्य प्रणाली को भी समझ पा रहे हैं. सभी बच्चों को पासबुक भी वितरित की गई हैं.

<u>विज्ञान मेला का आयोजन</u> - बच्चों में वैज्ञानिक उपलब्धियों के प्रति सजग बनाए रखने हेतु,विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में अभिरुचि उत्पन्न व प्रतिभा प्रदर्शित करने के लिए विज्ञान मेला व प्रदर्शनी का आयोजन किया जाता है. प्रोजेक्ट कार्य करने से छात्रगण विज्ञान के किसी भी पहलू को अधिक गहराई से सीखने का अवसर मिल रहा है.

<u>बाल कैबिनेट का गठन</u> - स्कूल में सूचना आदान प्रदान करना, नवाचार गतिविधियों का आयोजन, पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता लाने, व्यायाम तथा विभिन्न खेल आयोजित करने, प्रार्थना सभा, बाल सभा, विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों, महत्वपूर्ण दिवस एवं अन्य कार्यक्रमों के सफल संचालन के लिए बाल कैबिनेट का गठन किया गया है. नियमित रूप से हर माह बैठक आयोजित कर पंजी संधारण किया जाता है. बच्चों को चुनाव प्रक्रिया समझाने के लिए प्रत्यक्ष चुनाव आयोजित करवाया जाता है. बाल कैबिनेट के गठन से छात्र-छात्राओं में लोकतंत्र और संविधान के प्रति निष्ठा, आपस में सहभागिता की भावना जागृत होने के साथ-साथ अभिव्यक्ति और नेतृत्व क्षमता का भी विकास हुआ है. बाल कैबिनेट

के गठन से छात्र-छात्राओं एवं शिक्षकों के बीच समन्वय बढ़ाने में सहायता मिल रही है.

<u>सामुदायिक सहभागिता</u> - शाला में विविध कार्यक्रमों एवं नवाचारी गतिविधियों के व्दारा अध्यापन होने से सामुदायिक सहभागिता बढ़ी है. ग्राम के एक कर्मचारी श्री आदित्य देवांगन ने डिजिटल अध्ययन करने के लिए एलईडी टीवी क्रय हेतु ₹ 10000 का सहयोग राशि प्रदान की गई. इसी तरह से श्री सनेश भोई ने लेक्चर बाक्स एवं श्री शिव प्रसाद डड़सेना ने बैंड, ड्रम एवं अन्य वाद्य यंत्र प्रदान किए हैं. इससे पालकों एवं शिक्षकों में आपसी तालमेल मे वृध्दि हुई है.

इसके अलावा छात्र-छात्राओं में सर्वांगीण विकास हेतु राष्ट्रीय त्यौहार, उत्सव, महापुरुषों की जयंती, पुण्यतिथि, राष्ट्रीय दिवस, अंतर्राष्ट्रीय दिवस एवं अन्य महत्वपूर्ण दिवस के अवसर पर विविध कार्यक्रम जैसे भाषण, गीत, नृत्य, निबंध लेखन, चित्रकला, नाटक, तात्कालिक भाषण, रंगोली प्रतियोगिता, मेहंदी प्रतियोगिता आदि का आयोजन किया जाता है. इससे छात्र-छात्राओं के सर्वांगीण विकास में मदद मिल रही है. विद्यालय में अपना प्रतीक चिन्ह एवं प्रतीक वाक्य - 'ज्ञानम् परमम् ध्येयम्', का उल्लेख किया गया है एवं शाला की दीवार पर प्रतीक चिन्ह एवं वाक्य को लिखा गया है. शाला परिसर को पूर्ण हरा-भरा बनाने का संकल्प लिया गया है. कमरों के अंदर टीचिंग एड्स, गणित कार्नर, विज्ञान कार्नर आदि का निर्माण किया गया है. विज्ञान एवं अन्य विषयों का अध्यापन क्रियाकलाप एवं गतिविधि आधारित किया जाता है.

संपर्क - प्रेमचंद साव, शिक्षक शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला अरेकेल, सं.कें.- बंसुला, विकास खंड-बसना, जिला-महासमुंद(छत्तीसगढ़)पिन 493554 मो.नं.-8720030700

बुध्द पूर्णिमा पर विशेष

लेखिका - सुनीला फ्रेंकलिन

वेसक (पालि वेसाख, संस्कृत: वैशाख) एक उत्सव है जो विश्व भर के बौध्दों एवं अधिकांश हिन्दुओं व्दारा मनाया जाता है. यह उत्सव बुध्दपूर्णिमा को मनाया जाता है. इस दिन गौतम बुध्द का जन्म और निर्वाण दोनो ही हुए थे तथा इसी दिन उन्हें बोधि की प्राप्ति भी हुई थी. विभिन्न देशों के पंचांग के अनुसार बुध्दपूर्णिमा अलग-अलग दिन पड़ता है. विभिन्न देशों में इस पर्व के अलग-अलग नाम हैं. उदाहरण के लिए, हांग कांग में इसे बुध्द जन्मदिवस कहा जाता है, इण्डोनेशिया में 'वैसक' दिन कहते हैं, सिंगापुर में 'वेसक दिवस' और थाइलैण्ड में 'वैशाख बुच्छ दिन' कहते हैं. प्रस्तुत है बुध्द की एक प्रेरणादायक कथा -

अछूत लड़की

एक बार वैशाली नगर को बाहर जाते हुए गौतम बुध्द ने देखा कि कुछ सैनिक तेजी से भागते हुये एक लड़की का पीछा कर रहे हैं. वह लड़की डरी हुई थी. वह

एक कुएं के पास जाकर खड़ी हो गई. वह हाँफ रही थी. बुध्द ने उस बालिका को अपने पास बुलाया और कहा कि वह उनके लिए कुएं से पानी निकाले. खुद भी पिए और उन्हें भी पिलाए. इतनी देर में सैनिक भी वहां पहुंच गए. बुध्द ने उन सैनिकों को हाथ के संकेत से रुकने के लिए कहा. बुध्द की बात सुनकर वह लड़की झेंपते हुई बोली - 'महाराज मैं एक अछूत लड़की हूँ. मेरे पानी निकालने पर कुआं दूषित हो जाएगा.' बुध्द ने फिर कहा - 'पुत्री बहुत जोर की प्यास लगी है. पहले पानी पिलाओ.' इतने में वैशाली के राजा भी वहां गए. उन्होंने बुध्द को प्रणाम किया और सोने के बर्तन में केवड़े और गुलाब का सुगंधित जल प्रस्तुत किया. बुध्द ने उसे लेने से इंकार कर दिया. एक बार फिर बालिका से अपनी बात कही. बालिका ने साहस बटोर कर कुएं से पानी निकाल कर खुद भी पिया और बुध्द को भी पिलाया. पानी पीने के बाद बुध्द ने बालिका से भय का कारण पूछा. लड़की ने बताया मुझे संयोग से राजा के दरबार में गाने का अवसर मिला था. राजा ने प्रसन्न होकर मुझे अपने गले की माला पुरस्कार में दी, लेकिन उन्हें किसी ने बताया कि मैं अछूत लड़की हूँ. यह पता चलते ही उन्होंने अपने सिपाहियों को मुझे कैद खाने में डाल देने का आदेश दिया. मैं किसी तरह उनसे बच कर यहां तक पहुंची हूँ. तब बुध्द ने कहा - 'सुनो राजन. यह लड़की अछूत नही है. आप अछूत हो. इस बालिका के मधुर कंठ से निकले गीत का अपने आनन्द उठाया. उसे पुरस्कार दिया. यह अछूत हो ही नही सकती.' गौतम बुध्द की बात सुनकर राजा लज्जित महसूस करने लगे. इस कहानी से हमे यही सीख मिलती हैं कि इंसानियत ही सबसे बड़ा धर्म है. जात पात के आधार पर किया जाने वाला भेदभाव निरर्थक है. जो ऐसा सोचते हैं वे खुद सबसे बड़े अछूत हैं. इंसान अपने कर्मों से बड़ा होता है.

कला - पेपर क्लिप से बुकमार्क बनाना

अपनी आर्ट कॉपी से कागज़ लेकर उसपर कुछ जानवर, तितली आदि के सुंदर वित्र बनाएं और उन्हें पेपर क्लिप पर चिपका लें. इनका उपयोग अब आप बुक मार्क के रूप में कर सकते हैं.

Story – Ten Pundits

Ten pundits (holy men) went to the Ganga to take a dip in the river. They held each other's hands as they took dips thrice. When they came up the third time, they were not holding hands.

"Let's make sure all of us have come out of the river safely," said a pundit, "Everybody stand in line. I will count."

The other holy men liked the idea and lined up as the pundit took count, "1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9…" He stopped at 9 as the line came to an end.

“Nine, only nine,” screamed one of the pundits.

“Oh no, one of us has drowned in the river,” cried out another.

“You move aside. Let me take the count. Everybody, stand in a line,” said the second pundit. He began counting. He too could count only 9 people. All the pundits started crying for their lost friend.

A cap seller was watching the entire drama. He noticed that the man who did the counting had left himself out of the count. He offered to do the counting. But the holy men refused to take his help. “We are well read in scriptures. You are uneducated. We don’t trust your ability to count,” they said.

“Alright, I leave the counting to you. But do one thing. Here, put on these caps, first.”

It was getting hot. So, all the pundits put on the caps given to them. The cap seller asked them to remove their caps and keep them on the ground. The holy men placed the caps on the ground.

“Now count the caps you had worn,” said the cap seller.

All of them counted together, “1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9, 10.”

“We wore these caps. The caps we wore we have been counted. There are ten caps. This means we are ten,” the first pundit said. All nodded their heads in agreement. “Let’s buy these magic caps,” said another pundit.

The cap seller charged them one rupee for each cap, and walked away happily with ten coins jingling in his pocket.

पहेलियां

1. दिन, तिथि और त्योहार
   सबको मैं बतलाता हूं
   एक वर्ष के बाद में मैं
   अपने आप मर जाता हूं।
   उत्तर - कैलेंडर

2. सात दिनों में आता हूं
   छुट्टी संग में लाता हूं
   बच्चे हो या दफ्तर वाले
   सबको मौज कराता हूं।
   उत्तर - इतवार

3. जेब में रहता हूं हरदम
   हर कोई मुझको जाने
   बात कराता दूर-दूर की
   हर कोई मुझको माने
   उत्तर - मोबाइल फोन

4. सुबह लाए हलचल खासी,
   दोपहर शाम होता बासी,
   उत्तर - अखबार

आओ हंस लें

मास्टर पप्पू से:- एक तरफ पैसा, दुसरी तरफ अक्कल, तो तुम क्या चुनोगे?

पप्पू: पैसा.

मास्टर:- गलत, मै होता तो में अक्ल चुनता.

पप्पू:- आप सही कह रहे हो सर, जिसके पास जिस चीज की कमी होती है वो वही तो चुनेगा.

दुकानदार : कैसा सूट दिखाऊँ?

महिला : मेरी पड़ोसन तड़प - तड़प कर मर जाए ऐसा!!!

बच्चा पुराने फोटोज वाली एल्बम देखते हुए बोला - मम्मी ये फोटो में आपके साथ जो आदमी खड़ा है वो कौन है?

मम्मी : ये तेरे पापा हैं.

ये सुन कर बच्चा बोला : अगर ये पापा है तो हम जिस गंजे के साथ रहते है वो कौन है?????

पति - ये कैसी दाल बनाई है? ना नमक है, ना मिर्च है, बिल्कुल फीकी है. तुम सारा दिन मोबाइल में लगी रहती हो, कुछ पता नही चलता क्या डालना है क्या नही?

पत्नी - (बेलन दिखाते हुए) पहले तुम मोबाइल साइड में रख कर रोटी खाओ कब से देख रही हूँ पानी मे डुबो-डुबो कर रोटी खा रहे हो.

Poem - For want of a nail

For want of a nail the shoe was lost.

For want of a shoe the horse was lost.

For want of a horse the rider was lost.

For want of a rider the message was lost.

For want of a message the battle was lost.

For want of a battle the kingdom was lost.

And all for the want of a horseshoe nail.

नन्हे हाथो का कमाल

लेखक एवं चित्र - इन्द्रभान सिंह कंवर

इन नन्हे छोटे हाथो से हम

गड्ढे खूब बनायेंगे

इन गड्ढे में अच्छे सुन्दर

पौधे खूब लगायेंगे

खूब करेंगे इनकी सेवा

खूब करेंगे इनका पालना

इनके पालन में ही तो है

हम सभी लोगों का जीवन

इन पौधे के सेवा कर-कर

पौधे से पेड़ बनायेंगे

उन पेड़ों की छाँव में हम

मदमस्त मगन खो जाएंगे

गुब्बारे

लेखिका एवं चित्र - विजयलक्ष्मी राव

रंग बिरंगे ये गुब्बारे

लगते सबको प्यारे-प्यारे

कोई गोरा कोई काला

कोई हरा तो कोई नीला

कोई लम्बा कोई गोल

कोई मोटा जैसे ढ़ोल

गैस भरो तो उड़ जाता है

वापस कभी न फिर आता है

कुठ गुब्बारे मुझे दिला दो

मम्मी मेरा स्कूल सजा दो

छतरी

लेखिका एवं चित्र – आशा उज्जैनी

जब अंबर मे बदली छाती,

तब तो फूली नहीं समाती,

बंद करो तो खुलखुल जाती,

मेरी प्यारी प्यारी छतरी,

टप- टप, टिप- टिप गाना गाए,

खुद भीगे पर मुझे बचाए,

इसीलिए तो मुझको भाए,

मेरी राजकुमारी छतरी.

जब देती गर्मी की खेती,

कड़ी धूप में छाया देती,

कोई नहीं किराया लेती,

मेरी राजदुलारी छतरी।

आमा के चटनी

लेखक - महेन्द्र देवांगन माटी

आमा के चटनी ह अब्बड़ मिठाथे,

दू कंऊरा भात ह जादा खवाथे ।

काँचा काँचा आमा ल लोढहा म कुचरथे,

लसुन धनिया डार के मिरचा ल बुरकथे।

चटनी ल देख के लार ह चुचवाथे,

आमा के चटनी ह अब्बड़ मिठाथे ।

बोरे बासी संग में चाट चाट के खाथे,

बासी ल खा के हिरदय ह जुड़ाथे ।

खाथे जे बासी चटनी अब्बड़ मजा पाथे,

आमा के चटनी ह अब्बड़ मिठाथे ।

बगीचा में फरे हे लट लट ले आमा,

टूरा मन देखत हे धरों कामा कामा ।

छुप छुप के चोराय बर बगीचा में जाथे,

आमा के चटनी ह अब्बड़ मिठाथे ।

दाई ह हमर संगी चटनी सुघ्घर बनाथे,

ओकर हाथ के बनाय ह गजब मिठाथे ।

कुर संग मा भात ह उत्ता धुर्रा खवाथे,

आमा के चटनी ह अब्बड़ मिठाथे ।

ऊंट आया

लेखक - संतोष कुमार साहू (प्रकृति)

देखो देखो ऊंट आया,

ऊंट आया ऊंट आया,

लम्बा चौडा ऊंट आया।।

१

आंखे उनकी छोटी है,

है छोटे से कान भी ।

पूंछ उनकी छोटी है,

है छोटी सी नाक भी ।।

२

गर्दन उसकी लम्बी है,

लम्बी उनकी टांग भी।

पीठ उनकी उंची है,

ऊंचा है भई नाम भी।।

३

रेत में दौड लगाते हैं,

अपनी चाल दिखाते हैं।

जहाज तभी तो प्यारे,

रेगिस्तान में बन जाते हैं।।

४

जादू उनकी पीठ में हैं,

जल भर कर ढो जाती है ।

जब भी प्यास लगती है,

झट से प्यास बुझाती है।।

५

तभी तो प्यारा ऊंट,

सबके मन को भाता है ।

बहुत भारी वजन यूं ही,

ढो-ढो कर वह जाता है ।।

करते आराम नहीं

लेखक - सौरभ शुक्ला

दिन हो, रात हो अब युवा हिन्द के करते आराम नहीं
समाज बदल रहा है युवा, व्याकुलता का अब काम नहीं
भारत माता की वेदी पर निज प्राणों का उपहार लाए हैं
शक्ति भुजा में, ज्ञान गौरव जगाने भारत के युवा आये हैं
नित नए प्रयासों से समाज को आगे ले जा रहे हैं
देखो युवा क्या-क्या नये उद्यम ला रहे हैं

बिन्नी के साथ 'फ्लिपकार्ट' आया
देश में नया रोजगार लाया
कुणाल और रोहित की 'स्नैपडील'
कंस्यूमर को हो रहा गुड फील
देश की बेटियां कहां पीछे रहीं
राधिका की 'शॉप-क्लूज़' आ गयी

हुनर नहीं बर्बाद होता अब तहखानों में
जीवन रागनियां मचल रही नव-गानों में
समझ चुके हैं बिना प्रयास पुरुषार्थ क्षय है
आगे बढ़ चले अब, भारत माता की जय है
तप्त मरु को हरित कर देने की आस लगाये हैं
युवा सुख-सुविधाओं की नए परम्परा लाये है

भाविश का 'ओला', समय से घर पहुंचता
शशांक का 'प्रैक्टो' डॉक्टर से मिलवाता
दीपिंदर का 'जोमाटो' खाना खिलवाता
समर का 'जुगनू' ऑटोरिक्शा दिलवाता
विजय का 'पेटीएॅम' ट्रांजेक्शन की जान
सौरभ, अलबिंदर का 'ग्रोफर्स' खरीदारों की शान

शिरीष आपटे की जल प्रणाली देश के काम आ रही
बीएस मुकुंद की 'रीन्यूइट' सस्ते कंप्यूटर बना रही
बिनालक्ष्मी नेप्रम 'वुमेन गन सर्वाइवर नेटवर्क' चला रहीं

सची सिंह रेलवे स्टेशन पर लावारिसों को राह दिखा रहीं
प्रीति गांधी की मोबाइल लाइब्रेरी सबको ज्ञान बांट रही
डॉ. बोडवाला की 'वन-चाइल्ड-वन-लाइट' जीवन में जान डाल रही

जादव पायेंग "फॉरेस्ट मॅन ऑफ इंडिया" जूझा अकेला
आज १३६० एकड़ में 'मोलाई' का जंगल फैला
तरक्की की कलम से भाग्य लिखते जा रहे हैं
नव पथ पर निशां बनते जा रहे हैं
नित नए नाम जुड़ते जा रहे हैं
युवा समाज बदलते जा रहे हैं

गरमी आई

लेखक - बलदाऊ राम साहू

इस बरस जब गरमी आई

सूखे सब ताल-तलैया।

बूँद-बूँद पानी को तरसे

नाच नचाया ताता-थैया।

ऐसा लू का पड़ा थपेड़ा

मुश्किल हो गया जीना।

पंखे, कूलर हार गए सब

तर-तर चूआ पसीना।

सूरज अंगारे बरसाता है

जैसे बादल बरसाता पानी

झुलस-झुलस कर हारे सब जन

करके खुद नादानी.

अपने पैरों मार कुल्हाड़ी

जीवन भर हम पछतायें

कल को सुखद बनाना है तो

आओ, फिर से पेड़ लगायें.

बेटी

लेखिका - श्रध्दा श्रीवास्तव

घर में जब से बेटी आई है

घर परिवार में मानो बजती शहनाई है

धूप में छांव की तरह

दर्द में दवाओं की तरह

बेटियां आती हैं खुशियों में

खूबसूरत फिजाओं की तरह

मौसन में भी तो अंगड़ाई है

घर परिवार में मानो बजती शहनाई है

दो कुलों का दीपक है बेटियां

दो जहां हैं रोशन जिनसे

फूलों से भी सुंदर मुसकान लायी हैं

घर परिवार में मानो बजती शहनाई है

मैं मजदूर हूँ

रचनाकार - श्रवण कुमार साहू"प्रखर"

मैं मजदूर हूँ,

जी हां मैं मजदूर हूँ ।

इन चमचमाती सड़कों से लेकर,

उन गगनचुंबी इमारतों का निर्माण

मैंने ही अपने हाथों से किया है।

आदिम युग से लेकर आज तक,

विकास को दिशा मैंने ही दिया है,

फिर भी अपने हक से,

आज भी कोसों दूर हूँ,

क्योंकि मैं मजदूर हूँ।

मैंने उन तथाकथित,

उच्च लोग के लिए,

क्या से क्या नहीं किया ।

उन्हें अमृत देकर स्वयं,

उपेक्षा का जहर पिया,

अपनी कर्मशीलता के लिए,

मैं आज भी मशहूर हूँ,

क्योंकि मैं मजदूर हूँ।।

उनके हिस्से में सुख है,

मेरे हिस्से में दुःख है।

उनके हिस्से में छांव है,

मेरे हिस्से में धूप है।

मैं इतना क्यूँ मजबूर हूँ,

सिर्फ़ इसीलिए,

क्योंकि मैं मजदूर हूँ।।

कोई क्यूँ यह नहीं समझता,

कि मेरे भी ख्वाब है,

मेरे भी कुछ अरमान है,

दुःख और अभाव से ग्रस्त,

मेरे मासूम बच्चों का भी,

अपना कोई जहान है।

फिर दुनियाँ की हर खुशियों से,

मैं ही क्यों मरहूम हूँ,

सिर्फ इसीलिए,

क्योंकि मैं मजदूर हूँ।।

माँ-बाप की पुकार

लेखक - तबरेज आलम

कहाँ गया ओ बच्चा मेरा जिसे बड़े नाज़ों से पाला था
रात हो या दिन जिसके लिए हमने चाहा उजाला था।
रातों को जग कर जिनके लिए नींद गवाई थी
गोद को बिस्तर हाथों को तकिया बनायी थी।।
कहाँ गया ओ बच्चा मेरा जिसे बड़े नाज़ों से पाला था
रात हो या दिन .....

तेरे बचपन से जवानी तक हमने सुख दुख उठाया था
तेरी ख़ुशी ने हमें आपस में लड़ाया था।।

तुम्हें डांटा तुमसे प्यार भी जताया था
तुम्हें सही राह दिखाने यह कदम भी उठाया था।
तुम्हारी हर ख्वाहिश पूरी हो ये जिमेदारी भी निभायी थी
हमने अपने हिस्से की ख़ुशी भी तुझ पर लुटायी थी।।
जिस बच्चे पर फख्र था,और गर्व से सिर उठाया था
आज उसी की बेरुखी ने हमारा सिर झुकाया था।।

बरसों के स्नेह-प्यार को एक पल में भुला दिया
जो आँखे खुशियां देखनी चाहती थी,उसे ही रुला दिया।।
कहाँ गया ओ बच्चा मेरा जिसे बड़े नाज़ों से पाला था
रात हो या दिन जिसके लिए हमने चाहा उजाला था।।

<u>जंगल बचाय के करो जतन</u>

लेखक - श्रवण कुमार साहू

जिहाँ जंगल, तिहाँ जिनगी हे।

रुख राई के सुग्घर, फुनगी हे।।

जिहाँ जीव जंतु करे बसेरा।

चिरई-चिरगुन के बोली सुन,

जिहाँ होथे सांझ -सबेरा।।

जंगल हे, तभे तो जल हे।

जल हे तभे तो कल हे।।

बिन जल के दुनियाँ, जल जाही।

बिन जंगल के प्रकृति, का रह पाही?

अपनेच म झन, राहो मगन।

जंगल, जमीन के करो जतन।।

गरमी के दिन आगे

लेखिका - प्रिया देवांगन "प्रियू"

गरमी के दिन आगे संगी, मचगे हाहाकार ।
तरिया नदियाँ सबो सुखागे, टुटगे पानी धार ।।
चिरई चिरगुन भटकत अब्बड़, खोजत हावय छाँव ।
डारा पाना जम्मो झरगे, काँहा पावँव ठाँव ।।
तीपत अब्बड़ धरती दाई, जरथे चटचट पाँव ।
बिन पनही के कइसे रेंगव, जावँव कइसे गाँव ।।
बूँद बूँद पानी बर तरसे, कइसे बुझही प्यास ।
जगा जगा मा बोर खना के, करदिस सत्यानास ।।
बोर कुवाँ जम्मो सुख गेहे, धर के बइठे माथ ।
तँही बचाबे प्राण सबो के, जय जय भोलेनाथ ।।

हँसते और मुस्काते पेड़

लेखक - बलदाऊ राम साहू

सर उठाए, सीना ताने,

सैनिक-सा इतराते पेड़।

धूप सहकर , छाया देते

पथिकों को बुलाते पेड़।

पुरवाई की मधुर थाप पर

संगीत नया सुनाते पेड़।

सर्दी,गर्मी हर मौसम में

मीठे फल दे जाते पेड़।

हम सब को खुशियाँ देने

दुख को गले लगाते पेड़।

कितने जुल्म सहे हैं लेकिन

हँसते और मुस्काते पेड़।

धरती का सौंदर्य बढ़ाने

दयादृष्टि दिखलाते पेड़।

पुतरी पुतरा के बिहाव

लेखिका - प्रिया देवांगन "प्रियू"

पुतरी पुतरा के बिहाव होवत हे, आशीष दे बर आहू जी ।
भेजत हाँवव नेवता सब ला, लाड़ू खा के जाहू जी ।।

छाये हावय मड़वा डारा, बाजा अब्बड़ बाजत हे ।
छोटे बड़े सबो लइका मन, कूद कूद के नाचत हे ।।
तँहू मन हा आके सुघ्घर, भड़ौनी गीत ल गाहू जी ।
भेजत हावँव नेवता सब ला, लाड़ू खा के जाहू जी ।।

तेल हरदी हा चढ़त हावय, मँऊर घलो सौंपावत हे ।
बरा सोंहारी पपची लाडू, सेव बूंदी बनावत हे ।।
बइठे हावय पंगत में सब, माई पिल्ला सब आहू जी ।
भेजत हावँव नेवता सब ला, लाडू खा के जाहू जी ।।

आये हावय बरतिया मन हा, मेछा ला अटियावत हे ।
खड़े हावय बर चौंरा मा, मिल के सब परघावत हे ।।
नेंग जोग हा पूरा होगे, टीकावन मा आहू जी ।
भेजत हावँव नेवता सब ला, लाडू खा के जाहू जी ।।

मजदूर

लेखक - महेन्द्र देवांगन माटी

जांगर टोर मेहनत करथे, माथ पसीना ओगराथे ।
मेहनत ले जे डरे नहीं, उही मजदूर कहाथे ।
बड़े बिहनिया सुत उठके, बासी धर के जाथे ।
दिन भर बुता काम करके, संझा बेरा घर आथे ।
बड़े बड़े वो महल अटारी, दूसर बर बनाथे ।
खुद के घर टूटे फूटे हे, झोपड़ी मा समय बिताथे ।
रात दिन जब एक करथे, तब रोजी वो पाथे ।
मेहनत ले जा डरे नहीं, उही मजदूर कहाथे ।
पानी बरसा घाम पियास, बारो महीना कमाथे ।
धरती दाई के सेवा करके, सुघ्घर हरियर बनाथे ।
पहाड़ पर्वत काट काट के, पथरा मा पानी ओगराथे ।
पानी पसीया पीके संगी, माटी के गुन गाथे ।
मेहनत ले जे डरे नहीं, उही मजदूर कहाथे ।

माँ की पूजा (सार छंद)

लेखक - महेन्द्र देवांगन "माटी"

घर की माँ भूखी बैठी है, उसको कौन खिलाये ।
कैसे तू नालायक है रे, बात समझ ना पाये ।
माँ को भूखा छोड़ यहाँ पर, दर्शन करने जाये ।।
भूखी प्यासी बैठी है माँ, दिनभर कुछ ना खाये ।
मांगे जब वह पानी तो फिर, क्यों उसपर झल्लाये ।।
करे दिखावा कितना देखो, मंदिर चुनर चढ़ाये ।
घर की माई साड़ी मांगे, उसको तू धमकाये ।।
पाल पोसकर बड़ा किया जो, उस पर तरस न खाये ।
भूल गये संस्कारों को सब, लज्जा भी ना आये ।।
कैसे होगी खुश अब माता, अपने दिल से बोलो ।
पछताओगे तुम भी बेटा, आँखें अब तो खोलो ।।

सरस्वती वंदना

लेखिका - पद्यमनी साहू

ब्रम्हा जी के जल सिंचन से

प्रगटी माँ वागेश्वरी।

चतुर्भुजी रूप अनोखा

सोमयरूपा करुणेश्वरी।।

वीणापाणी ले वेद हस्त

शुभ स्फटिक माल ।

हरने को जन जन

का मोह जाल।।

कर हंस की सवारी

माँ श्वेत वस्त्र धारिणी।

पुष्प माल से शोभित

छवि मंगलकरिणी।।

माँ ने जब छेड़ी

वीणा की मधुर तान।

जलचर थलचर सारे

जीवों में आ गई जान।।

चली पवन सरसर सरसर

जल कलकल छलछल।

चंचरीक के मधुर कलरव से

चारो ओर मच गई हलचल।।

सुर मुनि शेष नारद शारद

माँ की करे स्तुति गान।

मातु भारती हंस वाहिनी

ब्रम्हाणी स्वीकारो सम्मान।।

अष्ट सिद्धि नव निधि

सकल कलाओं की दाता।

हर लो माँ अज्ञान हमारा

मेरी भाग्य विधाता।।

सच्ची कहानी

लेखक - नेमीचंद साहू गुल्लू

भूखे को भोजन

प्यासे को पानी

भटके को राह

बस यही है कहानी

रोगी को दवाई

बहन को भाई

दुखी की भलाई

प्रेम में गहराई

यार को यारी

निराश को वाणी

राही को छाया

बस यही है कहानी

धान को बाली

बहार को हरियाली

आकाश को लाली

मन को खुशहाली

हाथ को काम

देश को कुर्बानी

बड़ों को सम्मान

बस यही है कहानी

अनाथ को नाथ

गरीब को साथ

बूढों को दो बात

जीवों को बरसात

पक्षी को आकाश

जग को प्रकाश

भूमि को पानी

बस यही है कहानी

मातृ दिवस पर अनामिका पाण्डे का बनाया चित्र

नवाचार - कहानियां और शिक्षा में इनका उपयोग

लेखक - संजय गुलाटी

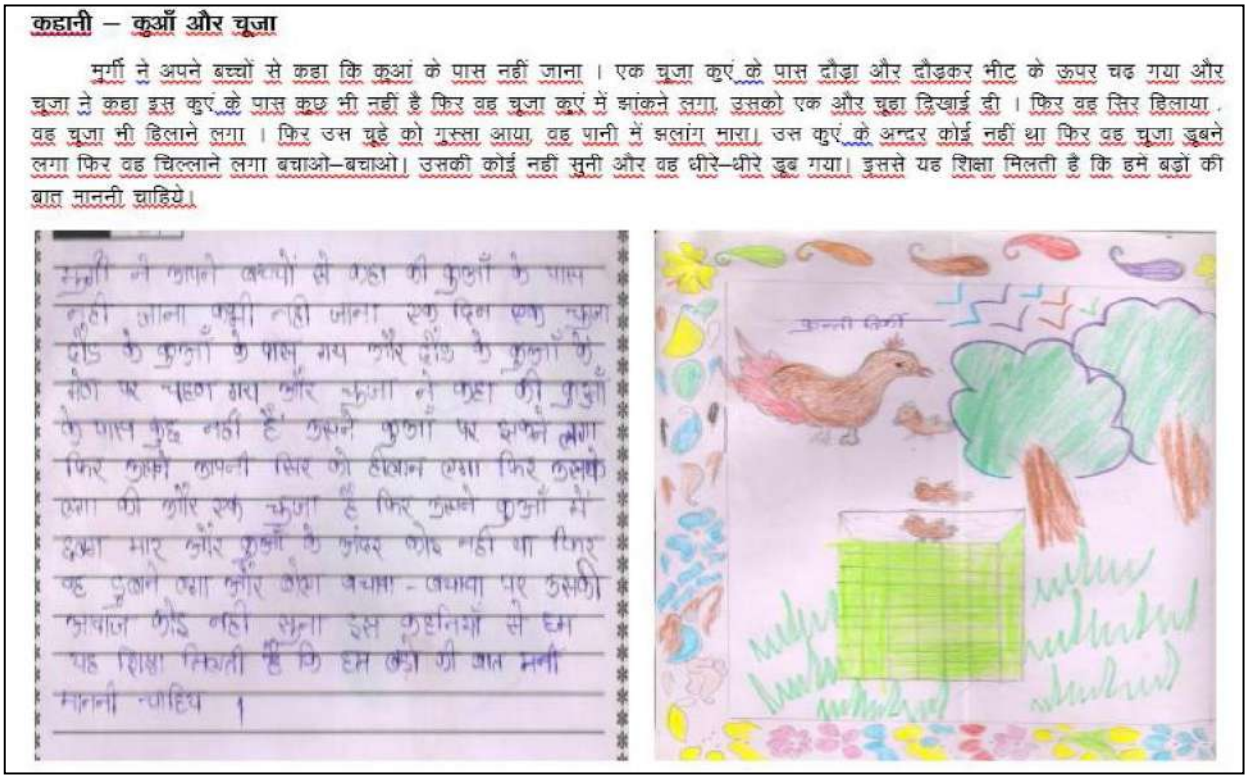

कहानी – कुआँ और चूजा

मुर्गी ने अपने बच्चों से कहा कि कुआं के पास नहीं जाना । एक चूजा कुएं के पास दौड़ा और दौड़कर भीट के ऊपर चढ गया और चूजा ने कहा इस कुएं के पास कुछ भी नहीं है फिर वह चूजा कूएं में झांकने लगा, उसको एक और चूहा दिखाई दी । फिर वह सिर हिलाया, वह चूजा भी हिलाने लगा । फिर उस चूहे को गुस्सा आया, वह पानी में झलांग मारा। उस कुएं के अन्दर कोई नहीं था फिर वह चूजा डूबने लगा फिर वह चिल्लाने लगा बचाओ–बचाओ। उसकी कोई नहीं सुनी और वह धीरे–धीरे डूब गया। इससे यह शिक्षा मिलती है कि हमें बड़ों की बात माननी चाहिये।

कहानी सुनाना सीखने-सिखाने की सबसे पुरानी और शक्तिशाली विधि है. दुनिया भर की संस्कृतियों ने हमेशा से ही विश्वास, परंपरा और इतिहास को भविष्य की पीढ़ी तक पहुंचाने के लिए कथा/कहानियों का उपयोग किया है. कहानियां कल्पनाशीलता को बढ़ाती है, कहानी कहने और सुनने वाले के बीच समझ स्थापित करने के लिए सेतु का काम करती है और बहुसांस्कृतिक समाज में श्रोताओं के लिए समान आधार तैयार करती है. कहानी सुनाने का उद्देश्य मनोरंजन के साथ साथ उससे शिक्षा प्राप्त करना होता है. मनुष्य में मौखिकता के उपयोग से सिखाने, समझाने और मनोरंजन करने की स्वाभाविक क्षमता होती है. इसी कारण से कहानी का उपयोग रोजमर्रा की जिदगी में प्रचिलत है. कहानी-कथन को "**भाषा**, **स्वर के उतार-चढ़ाव**, **शारीरिक-गति**, **हाव-भाव आदि के उपयोग से श्रोताओं के लिए किसी कहानी की घटना और चित्र को सजीव बनाने की कला के रूप**" में

परिभाषित किया जा सकता है. कहानी-कथन का सबसे महत्वपूर्ण पहलू यह है कि कहानी को पूरा करने और उसे फिर से बनाने के लिए श्रोता किस प्रकार से कहानी के दृष्य और विवरण अपने मस्तिष्क में विकिसत करते हैं. भारत के संदर्भ में, जहाँ बहुसांस्कृतिक समाज है, कहानी स्कूल में शिक्षण शास्त्र का एक सशक्त माध्यम हो सकती हैं. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा इस बात की अनुशंसा करती है कि स्कूली ज्ञान को समुदाय के ज्ञान से जोड़ा जाए. विभिन्न समुदायों में ज्ञान के संसाधन के रूप में प्रचिलत कहानियां, स्कूल को समुदाय से जोड़ने का एक अच्छा साधन हैं. कहानियाँ बच्चों को समूह में चुप्पी तोड़ने, समुदाय से सीखने, कहानी लिखने, कहानी की घटना पर आधारित रचनात्मक चित्र बनाने और अर्थपूर्ण सीखने के अनुभव बनाने के लिए प्रेरित करती हैं. स्कूलों में यह महत्वपूर्ण विधा बच्चों के लिए उपयोगी शिक्षण उपकरण है. कहानी के उपयोग से विषय में भी रोचकता आ जाती है. भाषा का कहानी कहने की कला से स्वाभाविक जुड़ाव होता है । दूसरे विषय में भी कहानी के उपयोग से जांच पड़ताल / खोजबीन का काम किया जा सकता है.

कहानी क्या है ?

कहानी को परिभाषित करने से पहले एक बात स्पष्ट करना ज़रूरी है कि जिस प्रकार गीली मिट्टी को अलग अलग रूपों में ढ़ाला जा सकता है, उसी प्रकार हमारी कहानियां भी अपनी प्रकृति, सुनने / पढ़ने वालों और परिस्थिति के अनुसार अपने आप को अलग-अलग रूपों में ढ़ाल सकती हैं. कहानी के कुछ संभावित रूप इस प्रकार हैं : उपन्यास,कविता, नाटक,चलिचत्र,संस्मरण,ऑडियो,दृश्य (चित्र) आदि. चलिए अपने पहले प्रश्न, 'कहानी क्या है ?' पर वापस चलते हैं. शुरू करने के लिए हम कह सकते हैं, कहानी किसी यात्रा का वर्णन है. किसी कहानी में हम एक या अधिक पात्रों की यात्रा का अनुसरण करते हैं. ये पात्र किन्ही बाधाओं को पार करते हुए किसी लक्ष्य को प्राप्त करने में लगे होते हैं. शब्दकोश क्या कहते हैं ?

1. एक वास्तविक या काल्पनिक कथा
2. किसी गद्य का छोटा काल्पनिक टुकड़ा

3. किसी कल्पना या उपन्यास की योजना
4. तथ्यों का लेखा जोखा
5. एक समाचार
6. एक पौराणिक कथा…. आदि आदि

कहानी किसी सच्ची या काल्पनिक घटना का इस प्रकार का वर्णन है जिसमें कहानी सुनने वाला सुनकर कुछ अनुभव करता है या कुछ सीखता है. कहानी जानकारी, अनुभव, दृष्टिकोण या रुख को समझाने का एक माध्यम भी है. हर कहानी के लिए एक कहानीकार और एक सुनने वाला होता है. माध्यम चाहे कोई भी हो, यह जरूरी है कि एक कहानी कहने वाला और एक कहानी को ग्रहण करने वाला होना ही चाहिए.

कहानियां आती कहां से हैं ?

हम सब रोज कहानियां कहते हैं – ज़्यादातर अपने आप से. किसी विषय पर अपने विचार बनाने, भविष्य के बारे में कल्पना करने, अपने आप को कुछ याद दिलाने, समझाने आदि के लिए हम अपने आपको कहानी सुनाते हैं. हम सभी के अंदर कहानी सुनाने का एक तंत्र होता है और सामग्री से भरपूर होता है. यही वो जगह है जहां कहानियों का जन्म होता है। इस प्रकार पहले कहानीकार और कहानी के पहले श्रोता हम स्वयं ही हैं.

कहानियों के साथ मेरा अनुभव

अगस्त-2012 से जुलाई-2018 तक छत्तीसगढ़ के चार जिलों बस्तर, सरगुजा, कबीरधाम और महासमुंद की 100 शासकीय प्राथिमक शालाओं के साथ काम करने का मौका मिला. दौरान सत्र 2014-15 और 2015-16 में इन स्कूलों में कहानी-उत्सव मनाया गया. इस उत्सव में गांव के बुजुर्ग / समुदाय के अन्य सदस्यों को कहानी सुनाने के लिए स्कूल में एक निश्चित तिथी पर आमंत्रित किया जाता है. एक सदस्य 8-10 बच्चों के एक समूह को गांव की संस्कृति से संबंधित कहानी सुनाते हैं. बच्चे कहानी सुनकर अपने-अपने समूह में कहानी लिखते हैं और घटनाओं तथा पात्रों की कल्पना कर कहानी का चित्र बनाते हैं. इस

प्रकार बच्चे समुदाय के मौखिक ज्ञान को लिखित रूप देते हैं और अपने रचनात्मक-संज्ञानात्मक कौशलों के उपयोग से उनका चित्रण करते हैं. ये कहानियां किसी किताब से न होकर सीधे समुदाय से आती हैं जिनमें संस्कृति, समुदाय, पर्यावरण, इतिहास, भूगोल इत्यादि का समृध्द ज्ञान शामिल होता है और जो बच्चों के जाने-पहचाने संदर्भ / प्रसंगो से जुड़ा होता है. इस गितिविध में एक तरफ जहां बच्चों ने कहानी के लेखक और चित्रकार के रूप में कहानी-उत्सव का आनंद लिया , वहीं समुदाय के सदस्यों को स्कूल में बच्चों की अकादिमक गतिविधि में शामिल होने की पहचान मिली और उन्होने बच्चों के भाषायी कौशलों के विकास में मदद करी.

इस आयोजन से जहां स्कूल और समुदाय की दूरी घटी, वहीं शिक्षक समुदाय में एक नयी चर्चा शुरू हुई कि
सामुदायिक-ज्ञान स्कूली-ज्ञान का आधार है और समुदाय के सांस्कृतिक प्रसंगो की मदद से भाषा, विज्ञान, सामाजिक जीवन आदि का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है.

कहानी-उत्सव के आयोजन के पश्चात् स्कूलों में बहुत सी सामुदायिक कहानियां और उनसे संबंधित चित्र उपलब्ध हुए जो दीवार-पुस्तक, बड़ी और छोटी किताब, आदि बनाने के लिए उपयोगी साबित हुए. साथ ही बच्चों की रचनात्मक प्रतिभा उनके स्कूल की गतिविधियों का हिस्सा बनी.

दो वर्षों तक कहानी-उत्सव का आयोजन 100 स्कूलों में किया गया जिसमें करीब 20000 बच्चों ने भाग लिया और समुदाय के करीब 500 सदस्यों ने बच्चें को कहानियाँ सुनायीं. लगभग 5000 कहानियों का दस्तावेजीकरण बच्चों व्दारा किया गया. सरगुजा जिले के अंबिकापुर ब्लॉक की प्रथमिक शाला बढ़नीझरिया की कुन्ती व्दारा लिखी गयी कहानी और उसके चित्र का एक उदाहरण प्रारंभ में दिया गया है.

नवाचार - भावनाओं का इंद्रधनुष

लेखिका एवं चित्र - विभा सोनी

बच्चों को अपनी भावना पहचानना. स्वीकार करना और उसे उचित तरीके से अभिव्यक्त करने की आवश्यकता को समझाने का प्रयास किया है.

प्रत्येक बच्चे को मैंने एक चार्ट पेपर और स्केच पेन दिया. अब उन्हे इन्द्रधनुष बनाने को कहा प्रत्येक दिवस को एक रंग दिया. इसके बाद उन्हे आंखें बंद करके सात दिनों की घटना याद करने को कहा. और उसे एक चेहरे में व्यक्त करने को कहा। मैने बच्चों को अपने अपने चित्रों को दिखाने को कहा और सभी के चेहरे अलग-अलग तरह के भावों के थे. जिस बच्चे को उस हफ्ते में तकलीफ थी उसने दुःख की फोटो बनायी. जिस बच्चे को खुशी थी उसने हँसता हुआ बनाया. जिनका सप्ताह सामान्य था उसने सामान्य फोटो बनाया. तात्पर्य यह है कि हर बच्चे को अपनी भावनाओं को समझना, व्यक्त करना बहुत ही आवश्यक है.

विज्ञान के खेल - केशिकत्व

सामग्री - कांच की 2 प्लेट, एक माचिस की तीली, रबर बैंड, रंगीन पानी, एक बर्तन.

विधि - कांच की 2 प्लेट लेकर उनके बीच एक किनारे पर एक माचिस की तीली रखकर रबर बैंड से बांध दें. इससे उनके बीच एक किनारे पर अधिक स्थान बन जायेगा और दूसरे किनारे पर कम स्थान होगा. अब इसे रंगीन पानी से भरे एक बर्तन में रखें. केशिकत्व के कारण पानी ऊपर चढ़ जाता है. जिस ओर स्थान कम है उस ओर पानी अधिक ऊपर चढ़ता है क्योंकि वहां पर केशिका पतली बनी है. जिस ओर माचिस की तीली होने के कारण स्थान अधिक है उस ओर पानी कम चढ़ता है.

वर्ग पहेली

रचनाकार - दीपक कंवर

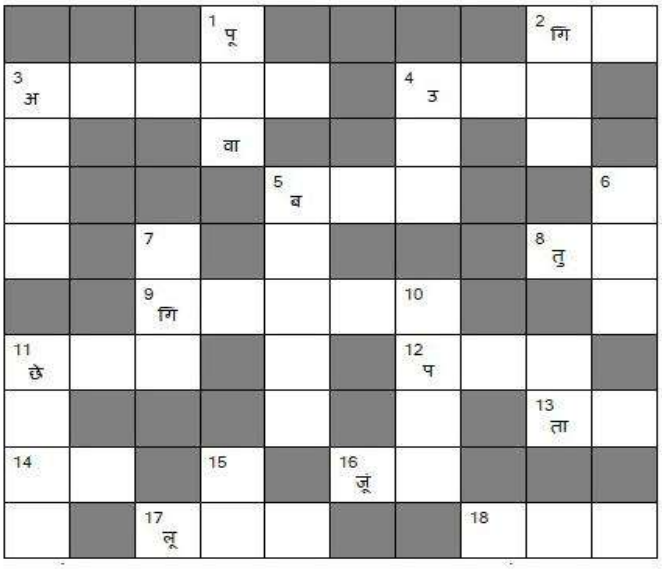

बाएं से दाएं - 2. मित्र 3. अजीब 4. उदण्ड 5. पशुओं का झुंड 8. लौकी 9. चमगादड़ 11. बकरी 12. बरामदा 13. ताला 14. उपला, कंडा 16. जूं 17. साड़ी 18. मुर्गा

ऊपर से नीचे - 1. पते के बीच आग मे पकाई हुई चटनी 2. गिद्ध 3. गुड की रोटी 4. उड़द 5. पतंगा 6. कछुआ 7. कुल्हाड़ी 10. बातुनी 11. एक प्रसिद्ध त्योहार 15. सब्जी

उत्तर